

I'm not robot!

शुभ की	शुभ की
<p>क्रोध से अम्बा की आँखों से नगी जो लाली । निकली दुर्गा के मुख से तब ही महाकाली । खाल लपेटे धीरे की गल मुंडन माला । लिए हव्य में खप्पर और इक खड़ग विशाला । लपलप करती लाल जुवां मुँह से धी निकाली । अति भयानक रूप से फिरती थी महाकाली । अट्टहास कर गजी तब देखा मैं धाई । मार धाड़ करके कीनी असुरों की सफाई ।</p> <p>पकड़ पकड़ बलवान देव्य तब मुँह में डाले । पीवी नीचे पीस दिए लाखों मतवाले । रण्डो की माला में काली शीश परीये । कइयों ने तो प्राण ही डर के मारे खोये ।</p> <p>चण्ड मुण्ड यह नाश देस आगे बढ़ आये । महाकाली ने तब अपने कई रंग दिखाये । खड़ग से ही कई असुरों के टुकड़े कर दीने । खप्पर मर मर कर लहू लगी देवों का पीने ।</p> <p>शेष चण्ड मुण्ड का खड़ग से लीना शीश उतार । आ गई पास भवानी के मार एक किलकार । कहा काली ने दुर्गा से किये देव्य संहार । शुभ निशुभ को अपने ही हाथों देना मार ।</p>	<p>तब अम्बे कहने लगी सुन काली मम बात । आज से चामुण्डा तेरा नाम हुआ विख्यात । चण्ड मुण्ड को मार कर आई हो तुम आय । आज से पूर कर होवेगा नाम तेरे का जाय । जो भ्रदा विद्या से सत्पन रहे अघाय । महाकाली की कृपा से संकट सब भिद जाय । नव दुर्गा का पाठ यह 'यामन' करे कल्याण । पढ़ने वाला पाएगा मुँह मांग बरदान ।</p> <p>आरत्ना अष्टाव्य</p>  <p>शेष काली ने जब कर दिया चण्ड मुण्ड का नाश । चुन्कर सेना का मरण हुआ निशुभ उदास । तभी क्रोध करके बढ़ा आप आगे । इक्टड़े किए देव्य जो रण से भागे ।</p>



गणेश चतुर्थी

(भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी)

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी ही गणेश चतुर्थी कहलाती हैं । वैसे तो हर महिने की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को गणेश जी का पूजन व व्रत किया जाता है । परन्तु भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी का विशेष महत्व है । इस द्र मध्यान्ह के समय गणेश जी का जन्म हुआ था । अतः इसे गणेश जन्मोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है ।

इस दिन प्रातःकाल स्नान आदि करके सोने, तांबे, मिट्टी अथवा गोबर से गणेश जी की मूर्ति बनाई जाती है। गणेश जी की इस मूर्ति को कलश में जल भरकर उसके मुँह पर कपड़ा बांधकर उस पर स्थापित किया जाता है। फिर मूर्ति पर सिंदूर चढ़ाकर पूजन करना चाहिए तथा पूजने के समय इक्कीस मोदकों का भोग लगाते है, तथा हरित दूर्वा के इक्कीस अंकुर लेकर यह दस ताम लेकर चढ़ाने चाहिये-

ॐ गताप नमः,
 ॐ गोरीसुमन नमः,
 ॐ अघनाशक नमः,
 ॐ एक दन्ताय नमः,
 ॐ ईश पुत्र नमः,
 ॐ सर्वसिद्धिप्रद नमः,
 ॐ विनायक नमः,
 ॐ कुमार गुरु नमः,
 ॐ इम्भववक्त्राय नमः,
 ॐ मूपकवाहन संत नमः,

तत्पश्चात इक्कीस लड्डुओं में दस लड्डू ब्राह्मणों को दान देना चाहिये, और ग्यारह लड्डू स्वयं खाने चाहिये। गणेश जी का पूजन शाम के समय करना चाहिए। पूजन के बाद नज़र नीचे रखते हुए चन्द्रमा को जल देना चाहिए। अतः इस दिन रात्रि में चन्द्र दर्शन नही करने चाहिए । उसके उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए । अंत में वस्त्र से ढका हुआ कलश, गणेश जी की मूर्ति व दक्षिणा ब्राह्मण को समर्पित करके गणेश जी का विसर्जन करना उत्तम माना जाता है । इस पूजा को करने से ऋद्धि-सिद्धि एवं बुद्धि की प्राप्ति होती है तथा बाधाओं का नाश होता है ।



